दिनांक
10/08/2020

मीरा की साहित्यिक विशेषताएँ

मीराबाई जिन्हें भगवान श्रीकृष्ण की दीवानी के रूप में जाना जाता है। मीराबाई न सिर्फ एक मशहूर संत थी बल्कि कृष्ण भक्ति शाखा की मुख्य कवयित्री और कृष्ण की अनन्य प्रेमिका थी उन्हें हर तरफ कृष्ण ही दिखते थे अर्थात् रोम-रोम कृष्ण-मय था।

भक्ति-भावना मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की कृष्ण भक्ति है। इस भक्ति में विनय-भावना, वैष्णवी प्रपत्ति, नवधा भक्ति के सभी अंग शामिल है। कृष्ण प्रेम में मतवाली मीरा लोक-लाज, कुल-मर्यादा सब त्यागकर, ढोल बजा-बजाकर भक्ति के राग गाने लगी। कवयित्री की कामना है कि उसके प्रिय कृष्ण उसकी आँखों में बस जाएँ-

"बसी मेरे नैनन में नंदलाल
मोहनि मूरति साँवरि सूरति नैणाँ बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजंती माल॥"

मीरा के पदों की कड़ियाँ अश्रुकणों से गीली है। सर्वत्र उनकी विरहाकुलता तीव्र भावाभिव्यंजना के साथ प्रकट होती है, इनका उन्माद तल्लीनता और आत्मसमर्पण की स्थिति तक पहुँच गया है। प्रकृति के पुकार में उनका दर्द और बढ़ जाता है-

"मतवारो बादर आवै:
हरि को सनेसो कबहुन लावै॥"

मीरा के पदों में उनकी अनुभूति के सहज उच्छ्वास है। उनके ये उच्छ्वास पदों के रूप में काल के अक्षय भंडार के रूप में संकलित किए जाएँगे। इनका भाव पक्ष इतना सबल है कि कलापक्ष का अभाव उसके नैसर्गिक सौन्दर्य को साकार कर देता है। मीरा का काव्य तीव्र भावानुभूति का काव्य है।

उसमें भाषा के सजाने-सँवारने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। मीरा के पदों की भाषा सरल है उनकी भाषा में राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग मिलता है। कहीं-कहीं गुजराती के शब्द भी आ गए हैं।

मीरा के काव्य में कई जगह अपने आप उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, विरोधाभास आदि अलंकार आ गए हैं- दीपक जोऊँ ज्ञान का, नेह री नाव चढ़ाव। आदि में अलंकारों का सहज प्रयोग दिखाई देता है।

मीरा के पद गीत-काव्य का चरम उत्कर्ष है जो पद संगीतज्ञों के कंठहार बने हुए हैं और आज तक सहृदयों को रससिक्त कर रहे हैं। गीतिकाव्य में मीरा आज भी अप्रतिम हैं प्रेमोन्माद, तीव्रता और तन्मयता की त्रिवेणी का पूरा वेग उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है।

"हे री मैं तो प्रेम दीवाणी।
मेरो दरद न जाने कोय"

की आत्माभिव्यक्ति अपनी तल्लीनता और तन्मयता के लिए प्रमाणस्वरूप है कृष्ण-दीवानी मीरा कृष्ण के सुंदर स्वरूपों का वर्णन करते हुए कई सुन्दर कविताओं की रचना भी की है।

संत मीराबाई की कृष्ण के प्रति उनका प्रेम और भक्ति, उनके द्वारा रचित कविताओं के पदों और

छंदों में साफ देखने को मिलती है। मीरा के काव्य में उच्च आध्यात्मिक अनुभूति प्रदर्शित होती है। भावनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति, प्रेम की ओजस्वी धारा का चित्रण प्राप्त होता है।

व्यक्तिगत संदर्भ में विशेषतः मीरा के कृतित्व में प्रेम और भक्ति के पक्ष सहज भाव से घुल-मिल गए हैं। यह संपृक्त अनुभूति, जो कबीर और जायसी में अलग-अलग रहस्यवादी प्रतीक-पद्धति में ढलती है और सूर में कृष्ण-राधा का प्रणय-चित्र बनती है, मीरा में सहज आत्मानुभूति का गीत बन जाती है। इसलिए मीराबाई के काव्य में व्यक्तिगत तन्मयता का विस्तार अधिक है कविता का दक्ष संप्रेषण कम।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार

(अतिथि शिक्षक)

हिन्दी विभाग

राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर

(BRABU MUZAFFARPUR)

मो० नं० - 8292271041

ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक 10/08/2020